10 आयुर्वेद दिवस – वैज्ञानिक संगोष्ठी

थीम –**''आयुर्वेद जन–जन के लिए एवं पृथ्वी के कल्याण के लिए''**

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में दशम आयुर्वेद दिवस पर एक दिवसीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रयागराज के पूर्व कमिश्नर बी. के. सिंह (सेवानिवृत्त भा.प्र.से.) उपस्थित रहे। संगोष्ठी की अध्यक्षता केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह द्वारा की गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ भगवान धनवन्तरि की पूजा अर्चन से हुआ। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आयुर्वेद केवल इलाज नहीं, स्वस्थ जीवन जीने की कला है। यदि हम इसकी जीवनशैली सम्बन्धी शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन में अपनाएं, तो हम दीर्घायु रोगमुक्त और मानसिक रूप से सन्तुलित जीवन जी सकते हैं। मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्‌बोधन में पूर्व कमिश्नर बी. के. सिंह ने आयुर्वेद दिवस पर प्रायोजित इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए आयोजकों को बधाई दी। उन्होने कहा आयुर्वेद आज विश्व के आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। इस स्थिति में हमें समय परीक्षित इस विधा को साक्ष्य आधारित शोध से पुष्ट करना होगा। तभी यह विधा वैश्विक क्षितिज पर लोकप्रिय एवं लाभकारी सिद्ध हो सकेगी। उन्होने आयुर्वेद के व्यावहारिक प़क्ष पर छोटे उदाहरण देकर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए। मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्‌बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जी. एस. तोमर ने आयुर्वेद दिवस पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं बताया कि आयुष मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष 23 सितम्बर को आयुर्वेद दिवस मनाने का निर्णय लिया है। इस वर्ष का थीम **''आयुर्वेद जन–जन के लिए एवं पृथ्वी के कल्याण के लिए''** है, जिसका लक्ष्य आयुर्वेद को आखिरी छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना है। भारतीय संस्कृति विश्व के कल्याण की कामना करती है, जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य के लिए समर्पित यह भारतीय विधा पृथ्वी के कल्याण के लिए समर्पित है। आयुर्वेद मानव के साथ–साथ पशु, पक्षी, पेड़–पौधे तथा पर्यावरण के स्वास्थ्य का भी साधन है। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने धन्यवाद ज्ञापनि कया। संगोष्ठी में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव, डॉ. कुमुद दूबे, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव एवं कर्मचारियों के साथ सुदर्शन आयुर्वेद के एमडी राजेन्द्र सिंह, एम क्यूब निदेशक अनुराग अस्थाना एवं डॉ. आशीष मौर्य आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन विश्व आयुर्वेद मिशन के सह–सचिव एवं राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. अवनीश पाण्डेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर औषधि पौधारोपण एवं वितरण भी किया गया एवं कार्यक्रम का आयोजन में वैद्यनाथ के प्रतिनिधि प्रणय चक्रवर्ती एवं शशांक पाण्डेय ने सहयोग प्रदान किया।

आयुर्वेद दिवस

10वां
आयुर्वेद दिवस

10 वां
आयुर्वेद दिवस

10वें आयुर्वेद दिवस पर पर्यावरण एवं आयुर्वेद पर वैज्ञानिक संगोष्ठी आयोजित

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज। विश्व आयुर्वेद मिशन एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान शिक्षा परिषद पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में दशम आयुर्वेद दिवस पर एक वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रयागराज के पूर्व कमिश्नर बी के सिंह (से.नि.आई एएस) उपस्थित रहे । संगोष्ठी की अध्यक्षता केन्द्र प्रमुख एवं वैज्ञानिक जी, डॉ संजय सिंह ने की । कार्यक्रम का प्रारंभ भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चन से हुआ । इसके बाद संस्थान के प्रमुख डॉ संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया एवं बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है । पेड़ पौधों, पशुओं एवं पर्यावरण के स्वास्थ्य के बिना मानव स्वास्थ्य अधूरा है । तदुपरांत मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ जी एस तोमर ने आयुर्वेद दिवस के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं बताया कि आयुष मंत्रालय ने अब से 23 सितम्बर को प्रति वर्ष आयुर्वेद दिवस मनाने का निर्णय लिया है । इस वर्ष का थीम आयुर्वेद जन जन के लिए एवं पृथ्वी के कल्याण के लिये÷ है । इसका लक्ष्य आयुर्वेद को आखरि छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना है। डॉ तोमर ने बताया कि आयुर्वेद केवल औषधि निर्माणशालाओं में निर्मित औषधियों तक ही सीमित नहीं है, प्रकृति में विद्यमान असंख्य जड़ी बूटियां एवं हमारे रसोई घर में उपलब्ध मिनी फार्मेसी हमारा विशाल औषधि भण्डार है । इसके साथ-साथ हमारी जीवनशैली न केवल स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अमृतवत फलदायी है अपितु असंख्य रोगों के लिए संजीवनी भी है । मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में पूर्व कमिश्नर बी के सिंह ने आयुर्वेद दिवस पर प्रायोजित इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए आयोजकों को बधाई दी । उन्होंने कहा आयुर्वेद आज विश्व के आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है ।

इस स्थिति में हमें समय परीक्षित इस विधा को साक्ष्य आधारित शोध से पुष्ट करना होगा । तभी यह विधा वैश्विक क्षितिज पर लोकप्रिय एवं लाभकारी सिद्ध हो सकेगी । उन्हेंने आयुर्वेद के व्यावहारिक पक्ष पर छोटे उदाहरण देकर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए । कार्यक्रम के अन्त में वैज्ञानिक एफ डॉ अनीता तोमर ने धन्यवाद ज्ञापन किया । संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ आलोक यादव, डॉ अनुभा श्रीवास्तव एवं कर्मचारियों के साथ सुदर्शन आयुर्वेद के एमडी राजेन्द्र सिंह, एम क्यूब डायरेक्टर अनुराग अस्थाना एवं डॉ आशीष मौर्य उपस्थित रहे ।संचालन विश्व आयुर्वेद मिशन के सह सचिव एवं राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ अवनीश पाण्डेय ने किया । इस अवसर पर औषधि पौधारोपण एवं वितरण भी किया गया एवं कार्यक्रम का आयोजन में वैद्यनाथ के प्रतिनिधि प्रणय चक्रवर्ती एवं शशांक पाण्डेय ने सहयोग प्रदान किया।

10वें आयुर्वेद दिवस पर पर्यावरण एवं आयुर्वेद पर वैज्ञानिक संगोष्ठी

आयुर्वेद व्यक्ति एवं पर्यावरण के बीच सामंजस्य पर आधारित जीवन विज्ञान - बी के सिंह

प्रयागराज । विश्व आयुर्वेद मिशन एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान शिक्षा परिषद पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में दशम आयुर्वेद दिवस पर एक वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रयागराज के पूर्व कमिश्नर बी के सिंह (से.नि.आई एएस) उपस्थित रहे । संगोष्ठी की अध्यक्षता केन्द्र प्रमुख एवं वैज्ञानिक जी, डॉ संजय सिंह ने की । कार्यक्रम का प्रारंभ भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चन से हुआ । इसके बाद संस्थान के प्रमुख डॉ संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया एवं बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है । पेड़ पौधों, पशुओं एवं पर्यावरण के स्वास्थ्य के बिना मानव स्वास्थ्य अधूरा है । तदुपरांत मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्बोधन में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ जी एस तोमर ने आयुर्वेद दिवस के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं बताया कि आयुष मंत्रालय ने अब से 23 सितम्बर को प्रति वर्ष आयुर्वेद दिवस मनाने का निर्णय लिया है । इस वर्ष का थीम 'आयुर्वेद जन जन के लिए एवं पृथ्वी के कल्याण के लिये' है । इसका लक्ष्य आयुर्वेद को आखरी छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना है ।

भारतीय संस्कृति विश्व के कल्याण की कामना करती है । अतः स्वास्थ्य के लिए समर्पित यह भारतीय विद्या पृथ्वी के कल्याण के लिए समर्पित है । आयुर्वेद मानव के साथ-साथ पशु पक्षी, पेड़ पौधे तथा पर्यावरण के स्वास्थ्य का भी साधन है । डॉ तोमर ने बताया कि आयुर्वेद केवल औषधि निर्माणशालाओं में निर्मित औषधियों तक ही सीमित नहीं है, प्रकृति में विद्यमान असंख्य जड़ी बूटियां एवं हमारे रसोई घर में उपलब्ध मिनी फार्मेसी हमारा विशाल औषधि भण्डार है । इसके साथ-साथ हमारी जीवनशैली न केवल स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अमृतवत फलदायी है अपितु असंख्य रोगों के लिए संजीवनी भी है । मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में पूर्व कमिश्नर बी के सिंह ने आयुर्वेद दिवस पर प्रायोजित इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए आयोजकों को बधाई दी । उन्होंने कहा आयुर्वेद आज विश्व के आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है । इस स्थिति में हमें समय परीक्षित इस विद्या को साक्ष्य आधारित शोध से पुष्ट करना होगा । तभी यह विद्या वैश्विक क्षितिज पर लोकप्रिय एवं लाभकारी सिद्ध हो सकेगी । उन्होंने आयुर्वेद के व्यावहारिक पक्ष पर छोटे उदाहरण देकर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए । कार्यक्रम के अन्त में वैज्ञानिक एफ डॉ अनीता तोमर ने धन्यवाद ज्ञापन किया । संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ आलोक यादव, डॉ अनुभा श्रीवास्तव एवं कर्मचारियों के साथ सुदर्शन आयुर्वेद के एमडी राजेन्द्र सिंह, एम क्यूब डायरेक्टर अनुराग अस्थाना एवं डॉ आशीष मौर्य उपस्थित रहे ।संचालन विश्व आयुर्वेद मिशन के सह सचिव एवं राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ अवनीश पाण्डेय ने किया । इस अवसर पर औषधि पौधारोपण एवं वितरण भी किया गया एवं कार्यक्रम का आयोजन में वैद्यनाथ के प्रतिनिधि प्रणय चक्रवर्ती एवं शशांक पाण्डेय ने सहयोग प्रदान किया ।

आयुर्वेद दिवस 2025 का आयोजन 23 सितम्बर को - डॉ जी एस तोमर

प्रयागराज। राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस का आयोजन 2016 से 2024 तक प्रतिवर्ष धन्वन्तरि जयन्ती को त्रयोदशी के दिन मनाया जाता रहा है । आयुर्वेद की बढ़ती हुई लोकप्रियता के कारण अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की तरह अनेकों देश आयुर्वेद दिवस मनाने हेतु उत्सुकता प्रकट की है । इस दृष्टि से प्रधानमंत्री महोदय के निर्देश पर आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने एक समिति गठित कर इसे व्यवहार में आ रही किसी तिथि को मनाने का सुझाव माँगा । जिससे अधिकतर देश इस उत्सव में भागीदार बन सकें । सौभाग्य से मैं भी उक्त समिति का सदस्य था । समिति ने यह ध्यान में रखकर कुछ अन्य तिथियों के साथ 23 सितम्बर इस आशय से सुझाया क्योंकि इस तिथि को रात दिन दोनों बराबर (ईक्वीनोक्स) होते हैं । चूंकि आयुर्वेद वात पित्त कफ आदि की साम्यता की बात करता है । अतः यह तिथि आयुर्वेद दिवस के लिए सबसे उपयुक्त होगी । उक्त समिति के सुझाव को स्वीकार करते हुए आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने गज़ट नोटीफिकेसन कर इसे मूर्त रूप प्रदान करते हुए प्रति वर्ष 23 सितम्बर को आयुर्वेद दिवस मनाने का निर्णय लिया है । अतः 10वां आयुर्वेद दिवस अब 23 सितम्बर को मनाया जाएगा । विश्व आयुर्वेद मिशन, इस उत्सव का प्रारम्भ प्रयागराज की पावन भूमि से 14 अप्रैल को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं जागरूकता कार्यक्रम से करने जा रही है । इसके पश्चात दि. 15 सितम्बर को पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन होगा । तदुपरांत 17 सितम्बर को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गंगा नाथ झा परिसर प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन सुनिश्चित किया गया है । इसी के सातत्य में दि. 21 सितम्बर को कोची (केरल) में चिकित्सकों की एक वैज्ञानिक संगोष्ठी प्रस्तावित है । अन्त में दि. 23 सितम्बर को नीमा के संयुक्त तत्वावधान में मीरजापुर में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है । इस वर्ष आयुर्वेद दिवस का थीम 'आयुर्वेद जन जन के लिए / पृथ्वी के कल्याण के लिए' है । अतः इस उत्सव में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों, जागरूकता अभियानों, क्विज, पोस्टर, निबंध, भाषण प्रतियोगिताओं एवं पर्यावरण संरक्षण पर कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से जन जन को आयुर्वेद की उपयोगिता से परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है । आयुर्वेदीय जीवनशैली आज वैश्विक परिदृश्य में अत्यंत लोकप्रिय हो रही है । इसको जन जन तक पहुँचाने के साथ नवाचारों के माध्यम से आयुर्वेद का लाभ स्वस्थ समाज एवं पीड़ित मानवता तक पहुंचाना इस उत्सव का ध्येय है ।